सेठ श्री लक्ष्मीनारायण द्वारकालाल अग्रवाल फागलवावाला परिवार द्वारा श्रीमद् भागवत कथा

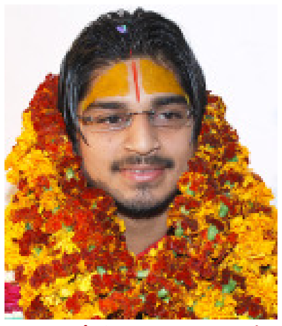

माई झुं. न्यूज। महाराजा अग्रसेन मार्ग पर स्थित केडिया सदन परिसर में लक्ष्मीनारायण द्वारकालाल अग्रवाल (फागलवावाला) परिवार द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ महोत्व मे नववर्ष पर श्रीराम जन्म, कृष्ण जन्मोत्सव श्रृदा व आस्था से मनाया गया। वृन्दावन से पधारे 19 वर्षीय कथा वाचक बाल व्यास देवेश दीक्षित महाराज ने कहा कि जीवन में मानव को अच्छे ग्रंथो का अध्ययन करना चाहिए। जड़ भरत चरित्र एवं प्रहलाद चरित्र पर महाराज ने राजा हिरण्यकश्यप तथा भगवान विष्णु पर प्रकाश डाला। कथा के माध्यम से उन्होंने बताया कि कलियुग में भक्त को भगवान की भक्ति विदुर और विदुरानी जैसी करनी चाहिए। भगवान अपनी कृपा सब पर करते है, परन्तु राक्षस प्रवृति वाले अवरोध पैदा करते है। महाराज ने कहा कि मानव को गाय की रक्षा सबके साथ मिलकर करनी चाहिए। भगवान ने भी गायो की रक्षा करने के लिए श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया था। कलयुग में जरूर गायों पर अत्याचार हो रहा हैं। उन्होने पुतना और व्यास जी की कथा पर भी प्रकाश डाला। मांखन चोरी एवं मांखन से होने वाले लाभ कि मांखन भी भगवान की लीला का एक हिस्सा हैं। उन्होने बताया कि कलयुग में अगर प्रत्यक्ष रूप से देव हैं तो श्री गिरिराज व श्रीराम भक्त हनुमान जी महाराज तथा यमुना जी महारानी अभी भी दर्शन करवा रहें हैं। भगवान को अपने धाम गये हुए अभी मात्र पांच हजार वर्ष हुए है। जब कलयुग अपनी चर्म सीमा पर होगा तब हमें इनके दर्शन नही होगें। इस दौरान महाराज ने अपने संगीतमयी स्वरों में कंस तथा उद्धव की कथाओं का श्रवण भी श्रोताओं को करवाया। रूकमणी विवाह की कथा को श्रीमद् भागवत कथा में पंहुचे श्रोताओं ने उत्साह के साथ सुना। श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ महोत्सव का रविवार को समापन किया गया। कथा का समापन रानी रूकमणी विवाह एवं सुदामा चरित्र के साथ किया गया। इसी क्रम में सुदामा कथा सुनाते हुए शुक्रदेव जी की विदाई और राजा परिक्षित को अंतिम उपदेश का ज्ञान देते हुऐ सभी भगवान के भक्तों को आर्शिवाद के साथ कथा का समापन किया गया। कथा समापन से पूर्व माई झुंझुनूं डॉट कॉम द्वारा बाल व्यास देवेश दीक्षित का अभिनन्दन एवं स्वागत किया गया। महाराज श्री को अभिनन्दन पत्र डी.एन.तुलस्यान एंव श्रवणकुमार केजडीवाल ने भेंट किया भागवत कथा की

फोटो : रामनिवास सोनी

विदाई आयोजक परिवारजन ने अपने सिर पर धारण कर नगर भ्रमण करते हुऐ की। सोमवार को धार्मिक कार्यक्रमों की श्रृखला में प्रात: सात बजे हवन यज्ञ एवं दोपहर को भजन कीर्तिन तथा मंगल पाठ व सांयकाल प्रसाद का आयोजन किया गया। आयोजक एडवोकेट दिनेश चन्द्र अग्रवालएवं नवलकिशोर अग्रवाल ने बताया कि दीक्षित महाराज ने भारत ही नहीं विदेशों मे हॉलैण्ड, सिंगापुर, लिमा, पेरू, मोरिसस, भूटान में भी श्रीमद् भागवत कथा का रसपान करवा चुके है। इससे पूर्व इन्होंने पिछले दिनों दार्जिलिंग में 204वीं कथा का वाचन किया था।

श्रद्धेय देवेशजी की झुंझुनूं में यह 205वीं भागवत कथा है। बाल व्यास कहते है मेरा लक्ष्य भागवत कथा से दुनिया को परिचित कराना और बृज के चौरासी कोस की परिधि के सभी मंदिरों का जीर्णोद्वार करना है।' बाल व्यास के पिताश्री का कहना है कि बाल व्यास को कथा वाचन से जो भी मिलता है वे इन सभी मंदिरों के जीर्णोद्वार में समर्पण कर देते है। कथा स्थल की तैयारियों एवं व्यवस्थाओं में आयोजक सेठ श्री लक्ष्मी नारायण द्वारकालाल अग्रवाल (फागलवावाला) के सीताराम, प्रहलादराय, गोविन्दराम, गोपालराय, बृजमोहन, मनमोहन, हरिकुमार, श्रवणकुमार, संजय, राजीव, मनीष, अंकुर, संशांक, एडवोकेट दिनेशचन्द्र, नवल किशोर, अश्विनी एवं अन्य परिवारजन के साथ स्थानीय जन का भी पूर्ण सहयोग रहा।

कथा में बगड़ के अर्जुनदास महाराज, बृजकिशोर अग्रवाल, चन्डीप्रसाद टीबडा, केशरदेव तुलस्यान, प्रो. योगेश शर्मा, काशीप्रसाद टीबड़ा, विश्वनाथ टीबड़ा, रामबाबु चनानियां, भगवती प्रसाद ढेडिया, सत्यनारायण हलवाई, बसंत मोरवाल, रामगोपाल भूत, मातेश टीबड़ा, संजय शर्मा, नरेश परसरामपुरिया, पवन केडिया, मनीष अग्रवाल, अशोक चनानिया, कपिल गाड़िया, अशोक तुलस्यान, विनोद सिंघानियां, डीएन तुलस्यान, ललित टीबड़ा, भरत तुलस्यान, लक्ष्मीकांत टीबडा, राजकुमार कन्दोई, महेश अग्रवाल, हरिराम सर्राफ, राजकुमार सिंधानीया, गोवरधन तुलस्यान, सुशील रिंगसिया, ओमप्रकाश आबुसरिया, मदनसिंह गील, छेदीलाल मारोलीया, ओमप्रकाश केजडीवाल, शिवकरण खेतान, सत्यनारायण शर्मा, राजेश केजडिवाल, मनीष अग्रवाल बैंगलोर, आईटीओं मनमोहन काण्डपाल, विमल ढंढारिया, अर्जुन वर्मा, इंन्द्र तुलस्यान, विश्वनाथ टीबड़ा, नवरंगलाल राणासरिया, महेश मोदी, केलाश सिंघानियां, जगदीश तुलस्यान, गोपाल हलवाई, सज्जन शर्मा , एवं बड़ी संख्या में महिलाओ के साथ अन्य गणमान्य जन की बडी संख्या मे उपस्थिती रही।

फोटो : रामनिवास सोनी

दीपेन्द्र सिंह शेखावत राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष बने

जयपुर, 2 जनवरी। विधानसभा अध्यक्ष श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत ने विश्वास दिलाया है कि उनका प्रयास रहेगा कि अध्यक्ष के रूप में पूर्ववर्ती पीठासीन अधिकारियों द्वारा स्थापित संसदीय परम्पराओं और प्रथाओं के उच्च मानदंडों को आगे बढ़ाया जावे। श्री शेखावत शुक्रवार को राज्य विधानसभा में अध्यक्ष पद पर निर्वाचित होने के बाद सदन को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अध्यक्ष के रूप में उन्हें जो गुरुत्तर दायित्व सौंपा गया है उससे भलिभांति परिचित हूँ और इस दायित्व को संविधान में उल्लेखित ध्येय तथा सदन के नियमों को स्वस्थ संसदीय परम्पराओं के अनुरूप निभाने का भरसक प्रयत्न करूंगा। सदन में प्रभावी कार्य निष्पादन के लिए विधानसभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन सम्बन्धी नियमावली है। इस तेरहवीं विधानसभा में करीब 108 सदस्य प्रथम बार चुनकर आए हैं, इतनी बड़ी संख्या में नये सदस्यों का निर्वाचित होकर आना इस विधानसभा के इतिहास में पहली बार हुआ है। इन सभी युवा सदस्यों से मेरा अनुरोध है कि वे दलीय विचारधारा से ऊ पर उठकर इस सदन में पूर्व में भी विधायक रहे अनुभवी माननीय सदस्यों से सदन की कार्यप्रणाली और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

जीवन परिचय : श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत का जन्म 20 जून, 1951 को जोधपुर जिले के मऊ ग्राम में श्री भारत सिंह शेखावत के घर में हुआ। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से स्नातक तक शिक्षा प्राप्त की। आपका 20 मई, 1972 को श्रीमती रसाल कंवर के साथ विवाह हुआ। आपके दो पुत्र एवं एक पुत्री है। व्यवसाय से कृषक श्री शेखावत 1980-85, 1993-98 में सातवीं एवं दसवीं राजस्थान विधानसभा के लिए सदस्य चुने गये। श्री शेखावत एक दिसम्बर,1998 को 11वीं राजस्थान विधान सभा के लिए सदस्य चुने गये। आप वर्ष 1980-83, वर्ष 1983-84 तथा 1994-95 में विधानसभा की अधीनस्थ विधान संबंधी समिति, जनलेखा समिति के सदस्य रहे हैं। श्री शेखावत 5 दिसम्बर, 1998 को अशोक गहलोत मंत्रिमंडल में कृषि विपणन, स्वायत्त शासन, नगरीय विकास एवं आवासन के राज्य मंत्री बने। दिनांक 26 फरवरी, 1999 को श्री शेखावत को आयोजना एवं जनशक्तितथा 25 जनवरी, 2003 को तकनीकी शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) का दायित्व सौंपा गया। श्री शेखावत वर्ष 1982-85 में राजस्थान वन्य जीव सलाहकार मंडल, श्रीमाधोपुर के सदस्य, 1993 में स्टेट फार्म्स कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष, रोड सेफ्टी कौंसिल ऑफ इण्डिया तथा मण्डल रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य बने। श्री शेखावत वर्ष 1985 में राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी (आई) के संयुक्तमंत्री बने। आप राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष भी रहे। समाज सेवा में सक्रिय श्री शेखावत 13वीं राजस्थान विधानसभा के लिए श्रीमाधोपुर (सीकर) क्षेत्र से निर्वाचित हुए हैं। श्री शेखावत 2 जनवरी, 2009 को तेरहवीं राजस्थान विधानसभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

जीवेम ने याद किया स्वामी विवेकानन्द को

माई झु.न्यूज। झुंझुनूं एकेडमी (सी.बी.एस.ई.)विज्डम सिटी प्रांगण में स्वामी विवेकानन्द जयन्ती समारोह कैरियर डे के रूप में मनाया गया। प्राचार्य डॉ. रवीन्द्र सिंह शेखावत, उप प्राचार्य रविशंकर शर्मा, सीईओ सुनिल कुमार ने स्वामी विवेकानन्द के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

प्राचार्य डॉ. रवीन्द्र सिंह शेखावत ने अपने भाषण में बोलते हुए विद्यार्थियों से कहा कि वे स्वामीजी के जीवन से प्रेरणा लें और जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयास करें। कार्यक्रम का संचालन आरोही मील और विशाल ने किया।

राठौड़ की सास नहीं रही।

माई झु. न्यूज। सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक डॉ. अमरसिंह राठौड़ की सास रंग विलास कंवर का स्वर्गवास गुरूवार को हो गया। 80 वर्षीय विलास कंवर के पति गोपाल सिंह शेखावत के बरकत नगर स्थित निवास पर स्व. विलास कंवर को गणमान्य जन ने पुष्प अर्पित कर श्रृद्धांजली दी।

युवा पीढी की प्रेरणा हैं विवेकानन्द- दिलीप मोदी

माई झुं.न्यूज। जीवेम समूह की वरिष्ठ इकाई न्यू झुंझुनूं एकेडमी में स्वामी विवेकानन्द की जयन्ती को युवा दिवस के रूप में मनाया गया। प्रार्थना सभा में आयोजित समारोह में छात्र-छात्राओं द्वारा स्वामी विवेकानन्द के जीवन आदर्शो के बारे में रोचक जानकारियां दी गयी।

प्रधानाचार्य मोहनलाल धायल ने समस्त विद्यार्थियों से विवेकानन्द जैसे युग पुरूषों के जीवन तथ्यों को ईमानदारी से अपनाने की बात कही। जीवेम समूह के चैयरमेन दिलीप मोदी व प्रबन्ध निदेशक नीरजा मोदी ने समस्त छात्र-छात्राओं को युवा दिवस के उपलक्ष्य में बधाई देते हुए कहा कि मानवता के मायनों को सही रूप में जानने के लिए यह बहुत जरूरी हो गया है कि विवेकानन्द जैसे महापुरूषों को पढें व सुनें और व्यावहारिकता में जीएं।

इसके अलावा कुरड़ाराम धींवा,मूलचन्द झाझड़िया,सुकेश पचोरी व राजेन्द्र पूनिया ने भी विवेकानन्द के जीवन के सारगर्भित तथ्यों व घटनाओं पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को बहुत कुछ सीखने हेतु प्रेरित किया।

जीवेम ने मनाया लोहड़ी

माई झु.न्यूज। झुंझुनूं एकेडमी (सी.बी.एस.ई.)विज्डम सिटी में मकर संक्रांति व पंजाबी त्यौहार लोहड़ी धूमधाम से मनाया गया। विश्व में भारत ही ऐसा देश है जहां हर दिन उत्सव मनाये जाते हैं ? उसी परम्परानुसार विज्डम सिटी में लोहड़ी और मकर सक्रांति पर्व उत्साहपूर्वक मनाया। पूरा प्रांगण पंजाबमय हो गया। सर्वप्रथम प्राचार्य डॉ. रवीन्द्र सिंह शेखावत, उप प्राचार्य रविशंकर शर्मा, सीईओ सुनिल कुमार शर्मा हाउस मास्टर गौरीशंकर जांगिड़ आदि समस्त अध्यापकों के सहयोग से पूजा कर, शुभ अग्नि प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। विद्यालय के सिक्ख अध्यापक सरदार इन्द्रजीत सिंह ने एक प्रेरक उद्बोधन एवं लोहड़ी पर्व से सम्बंधित जानकारियों के पश्चात सभी शिक्षक शिक्षिकाओं को लोहड़ी की पवित्र अग्नि की परिक्रमा हेतु आमंत्रित किया। पांच बार पउड़ी साहिब का पाठ कर सभी के साथ परिक्रमा दी। विद्यालय की छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक डॉ. अमर सिंह राठौड का गुरूवार को सूचना केन्द्र में ऑल इंडिया स्माल एवं मीडियम न्यूज पेपर्स फेडरेशन की ओर से अभिनन्दन करते हुए।

टाइडेम में अभिनन्दन समारोह 2009 का आयोजन

झुंझुनूं, 2 जनवरी। स्थानीय टाइडेम संस्थान परिसर में अभिनन्दन समारोह 2009 का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां पेश की। कार्यक्रम मुख्य अतिथि टैगोर स्कूल की प्राचार्या शिखा सहाय थी।

अध्यक्षता जेपी शर्मा ने की। सुरेन्द्र सिंह सागवान ने विद्यार्थियों को नये वर्ष की शुभाकामनाऐं देते हुए कहा कि सकारात्मक सोच के साथ प्रतिस्पर्धात्मक युग में अच्छी मेहनत करे। टाइडेम व्यवस्थापक विक्रम जांगिड़ ने छात्र-छात्राओं को जीवन में अनुशासन का महत्व समझाया।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां पूजा चाहर, पिटूं काजला, सूकीर्ति, बबीता कुमारी, चित्रलेखा, रमन आदि ने दी। संचालन सत्यनारायण शर्मा ने किया। कार्यक्रम में देवेन्द्र सिंह शेखावत एवं कुलदीप सिंह ने आगामी परीक्षाओं की जानकारी से अवगत कराया।

परोपकार में रसानुभूति

प्राय: देखा जाता है कि संसार में सभी की स्वाभाविक वृति अपने स्वार्थ साधन की ही होती है लेकिन स्वार्थ वही उचित है जिसमें परमार्थ का भी अंश हो जो आत्महित कर सकता है, वहीं दूसरों को भी सुखी बनाने में सहायक हो सकता है लेकिन संकीर्ण स्वार्थ भावना रखकर दूसरों को होने वाली परेशानी की ओर आंखे बन्द रहती हैं। संसार का समस्त ज्ञान, विज्ञान इसी कारण विकसित हो सका कि उनका विकास करने वालों ने अपने स्वार्थ की उपेक्षा की और समुची मानवता के कल्याण का दृष्टिकोण अपनाया। परस्पर सहयोग, करूणा, सेवा पाकर भी व्यक्ति समाज में औसत स्तर से उंचा उठ सकता है। परोपकार की भावना एक देव वृति है। इसमें दूसरों के हितों को प्रधान समझ अपने लाभ को गौण माना जाता है। परमार्थ का अर्थ बीज बोना है जो अनेक गुण होकर उगे। लोक सेवा में निरन्तर प्रवृति की श्रृद्धा,विश्वास, सम्मान और सहयोग आदि सौभाग्य के अवसर सुलभ होते हैं। साथ ही परोपकार से स्वयं आत्मा को संतोष मिलता है और संपतियां भी सार्थक होती है। जो नदी बहती नहीं, वह सड़कर सुख जाती है, जो राह कभी चलती नहीं, वह राह खो जाती है, जो जाति चलती नहीं ,वह मिट जाती है। मोह ही जन्म और मृत्यु का कारण है।

नन्दलाल तुलस्यान मुम्बई प्रवासी